अंगारक

आलेख - डॉ० योगेश जैन०

चित्रांकन - त्रिभुवन सिंह
सहयोग - सरोज वी० एम०

आज सेठानी ईर्ष्या से जली-भुनी जा रही थी और पड़ोसिन को नीचा दिखाने की सोच रही थी, तभी उसके पति ने प्रवेश किया।

अरी भागवान ! सुनो अभी तक भोजन नहीं--

मुझसे मत बोलो तुम्हारी नौकरानी हूँ ? रसोइया हूँ ?

चन्द्रमुखी से ज्वालामुखी बनी पत्नी की खुशामद करते हुये भोलू बोला —

रानी कुछ कहो भी, बात क्या हुई ? कहे बिना हमें कैसे पता चले ?

क्या कहूँ ? मुहल्ले की सारी औरतें तो रोज नये-नये गहने पहने.. और मैं बस वही सालों पुराना हार, चूड़ियाँ -।

अरी बावली ! कैसी बातें करती हो ? नारी के गले की शोभा तो मधुर वाणी, व्यवहार और उसका शील है।

तुम कुछ समझते हो ? बिना सुन्दर गहने पहने समाज में सम्मान नहीं मिलता।

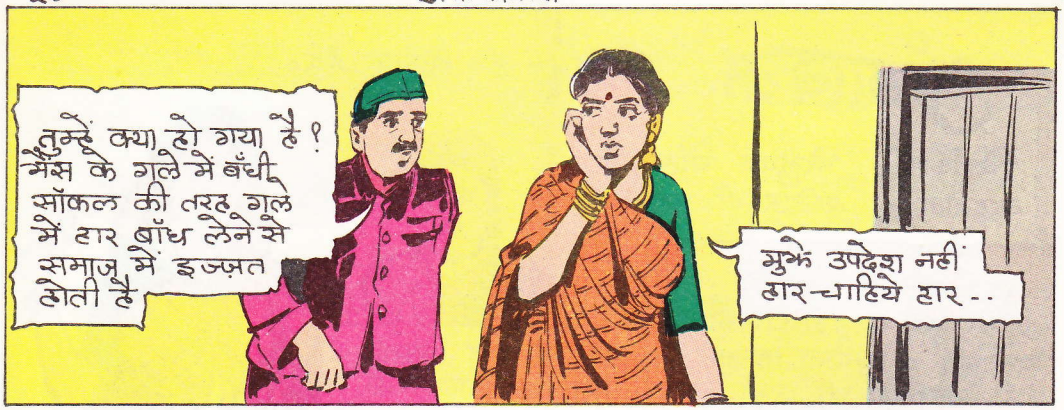
तुम्हें क्या हो गया है ? भैंस के गले में बँधी सॉकल की तरह गले में हार बाँध लेने से समाज में इज्ज़त होती है
मुझे उपदेश नहीं हार चाहिये हार - -

फलस्वरूप पत्नी पीड़ित भोलूराम सर्राफ की दुकान पर जा पहुँचा।
सेठ जी ! कोई ऐसा सुन्दर हार दिखाओ जो किसी के पास न हो।
अच्छा ! बैठो, लाता हूँ। ऐसा हार, जो संसार में कोई न बना सके - - ।

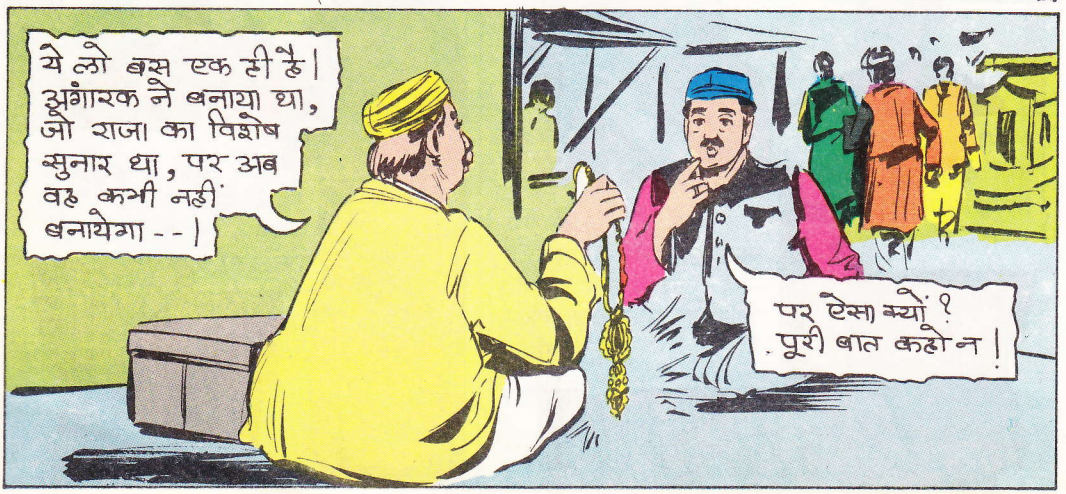
ये लो बस एक ही है। अंगारक ने बनाया था, जो राजा का विशेष सुनार था, पर अब वह कभी नहीं बनायेगा - - ।
पर ऐसा क्यों ? पूरी बात कहो न !

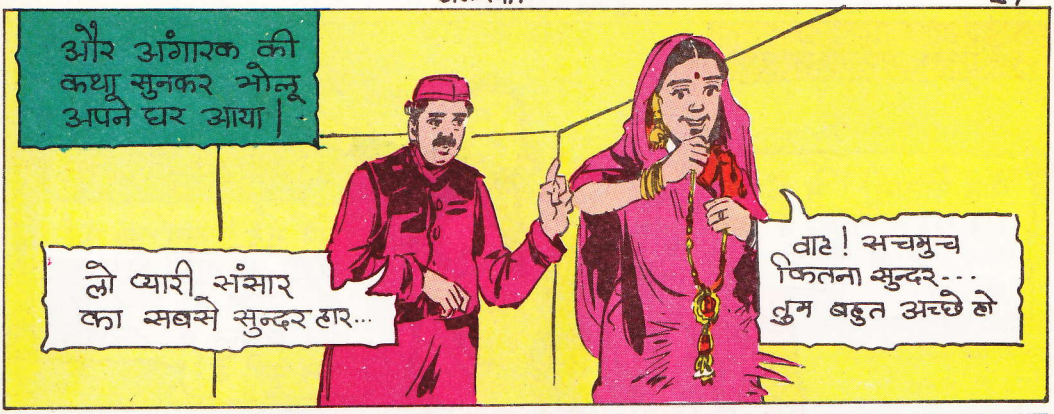
और अंगारक की कथा सुनकर भोलू अपने घर आया।
लो प्यारी, संसार का सबसे सुन्दर हार...
वाह! सचमुच कितना सुन्दर... तुम बहुत अच्छे हो

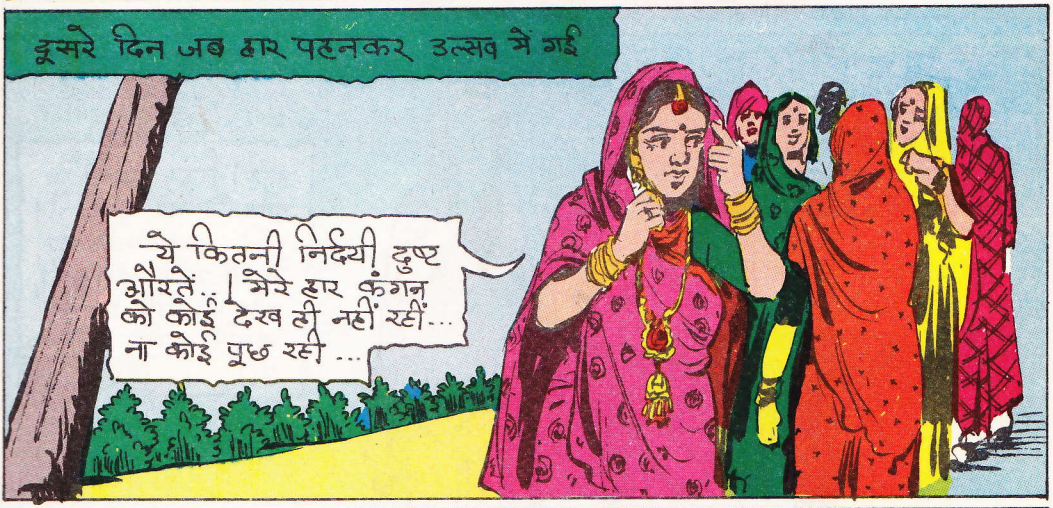
दूसरे दिन जब हार पहनकर उत्सव में गई
ये कितनी निर्दयी दुष्ट औरतें.. मेरे हार कंगन को कोई देख ही नहीं रही... ना कोई पूछ रही ...

दुःखी सेठानी ने गहने दिखाने की एक तरकीब निकाली। अपने घर में स्वयं ही आग लगाकर..
आग - आग... बचाओ - बचाओ...

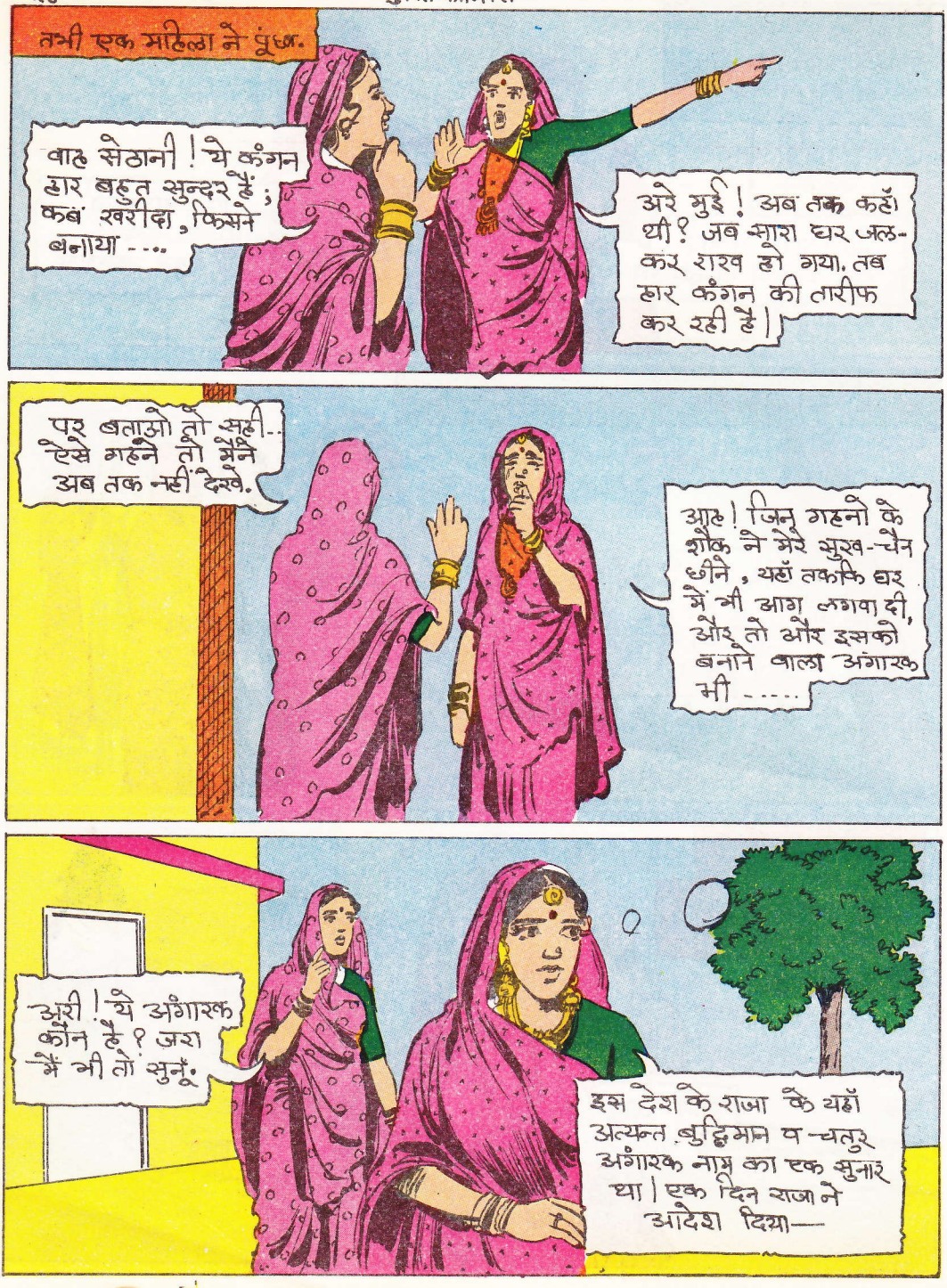
तभी एक महिला ने पूछा.
वाह सेठानी ! ये कंगन हार बहुत सुन्दर हैं ; कब खरीदा, किसने बनाया ....
अरे मुई ! अब तक कहाँ थी ? जब सारा घर जल-कर राख हो गया, तब हार कंगन की तारीफ कर रही है !
पर बताओ तो सही.. ऐसे गहने तो मैंने अब तक नहीं देखे.
आह ! जिन गहनों के शौक ने मेरे सुख-चैन छीने, यहाँ तक कि घर में भी आग लगवा दी, और तो और इसको बनाने वाला अंगारक भी ....
अरी ! ये अंगारक कौन है ? जरा मैं भी तो सुनूं.
इस देश के राजा के यहाँ अत्यन्त बुद्धिमान व चतुर अंगारक नाम का एक सुनार था। एक दिन राजा ने आदेश दिया—

प्रिय अंगारक! अबकी बार ऐसे आभूषण बनाओ, जैसे अब तक किसी ने न बनाये हों।
जैसी आपकी इच्छा.
और राजा ने सोना व अमूल्य नगीना देकर विदा किया।

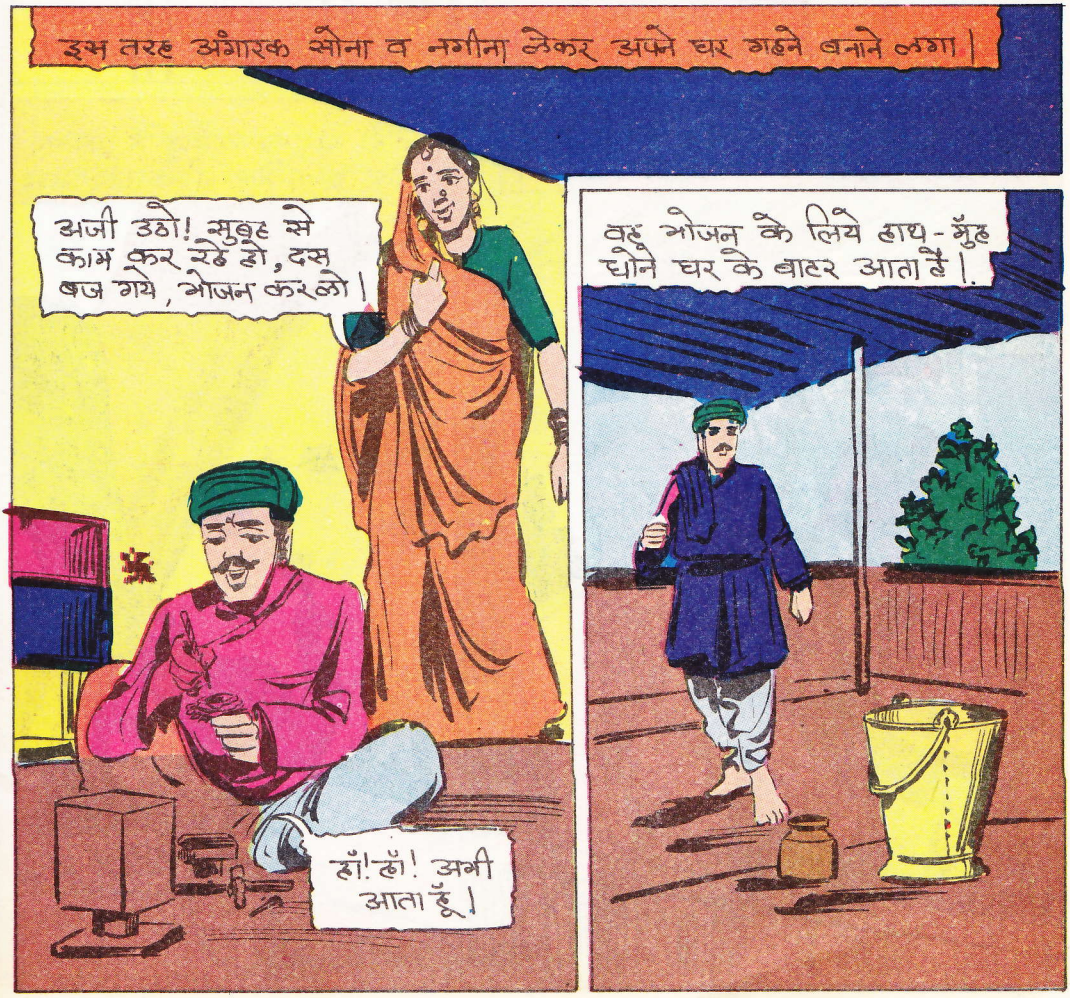
इस तरह अंगारक सोना व नगीना लेकर अपने घर गहने बनाने लगा।
अजी उठो! सुबह से काम कर रहे हो, दस बज गये, भोजन कर लो।
हाँ! हाँ! अभी आता हूँ।
वह भोजन के लिये हाथ-मुँह धोने घर के बाहर आता है।

पर जैसे ही घर के बाहर आता है तो वह देखता है कि ---
अरे वाह! धन्य भाग हमारे, अतिथि-पूजा-सत्कार का महान सुअवसर! मुनिराज! लगता है साक्षात् मोक्षमार्ग ही हमारे द्वार पर-चलकर आ रहा हो।
महान पुण्योदय से अंगारक पत्नी सहित मुनिराज को पड़गाहन कर आहार देता है।
तभी घर के आंगन में वृक्ष पर बैठा भूखा मोर नीचे उतर आता है।

नवधा-भक्ति पूर्वक आहारदान के बाद अंगारक स्वयं भोजन करता है।
और फिर जब गहने बनाने आता है तो ---
हाय! मैं लुट गया --- अब क्या होगा -- अभी तो यहीं था..
अरे ! क्या हो गया ? इतनी सर्दी में भी पसीना -- क्या ढूँढ रहे हो ?
-चुप रह ! मैं तो मर जाऊँगा , क्या मुँह दिखाऊँगा -- | अभी तो यहीं रखकर गया था.
राजा का बेशकीमती नगीना, मैं यहीं रखकर गया था ; नहीं मिला तो मर जाऊँगा ...
हाय ! क्या कह रहे हो ? अब क्या होगा ?

मुनिराज के अलावा तो अभी तक यहाँ कोई नहीं आया, लगता है वही ---
अरे ! तुम्हें पता है कि तुम क्या कह रहे हो ? अचौर्य-महाव्रत के धारी मुनिराज क्या कभी ऐसा अधम कार्य कर सकते हैं ?

नहीं -- नहीं वही पापी अधम धूर्त -- जो मेरे नगीने को --
आह ! मैं क्या सुन रही हूँ ? अरी धरती ! तू फट क्यों नहीं गई --। काश ! आज मैं बहरी होती।

और अत्यन्त क्रुद्ध होकर अंगारक मुनिराज को मारने जंगल की ओर चल दिया।

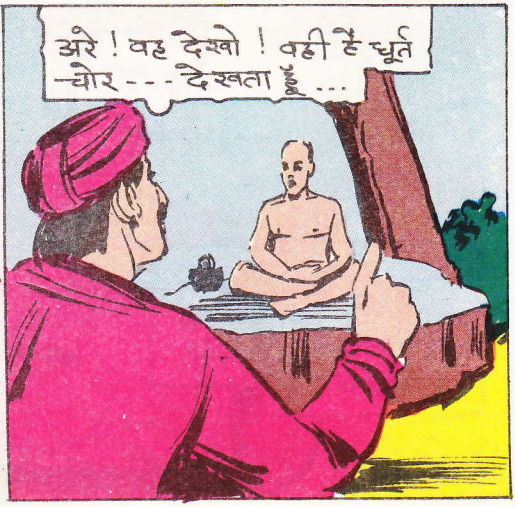
अरे ! वह देखो ! वही है धूर्त चोर --- देखता हूँ ...

पास आने पर जब अंगारक गाली-गलौच करने लगा, तो उपसर्गजयी- मुनिराज ने शान्तिपूर्वक मौन धारण कर लिया।
अरे -चुप क्यों हो गया ? बता मेरा नगीना कहाँ है ? नहीं तो -- लो ये चखो मज़ा.
परन्तु इण्डा पेड़ पर बैठे मोर के जा लगा।

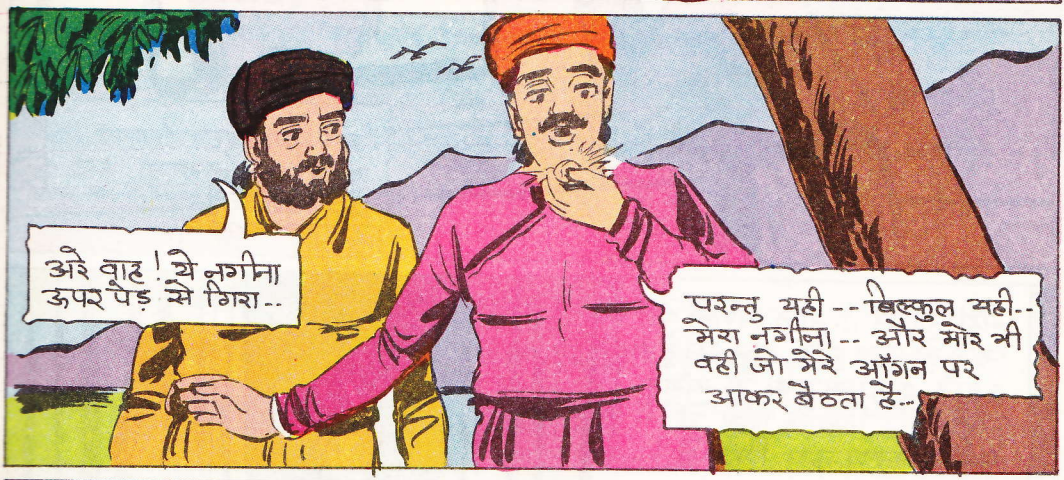
अरे वाह ! ये नगीना ऊपर पेड़ से गिरा --
परन्तु यही -- बिल्कुल यही-- मेरा नगीना -- और मोर भी वही जो मेरे आँगन पर आकर बैठता है...

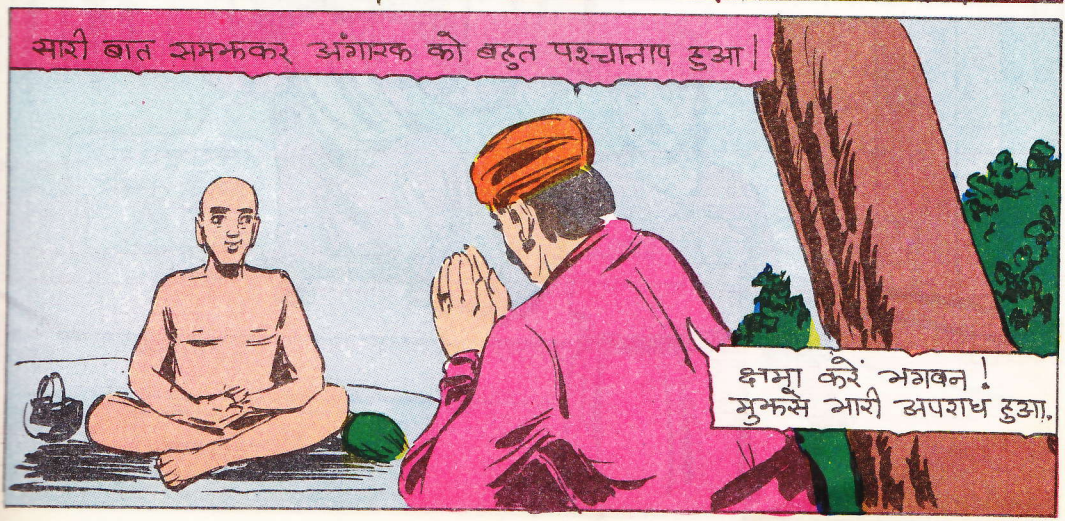
सारी बात समझकर अंगारक को बहुत पश्चात्ताप हुआ।
क्षमा करें भगवन ! मुझसे भारी अपराध हुआ.

आत्मग्लानि से भरा अंगारक नगीना लेकर राजा के पास गया.
अपराध क्षमा करें राजन्! ये लो अपना नगीना और स्वर्ण ..., इस जड़-रत्न को लगाने में मैंने अमूल्य नर-जन्म यूँ ही गंवाया।
अरे क्या हुआ ? क्या तुमने रत्न लगाना बन्द कर दिया ?
नहीं राजन ! रत्न लगाने का काम तो अब शुरू कर रहा हूँ। अपने शुद्धात्मद्रव्य में संयम-रत्न --- जिसके लिए ये दुर्लभ मनुष्यजन्म मिला है।
तुम्हारा पूरा राज्य धन्य है, तुम्हारे विचारों पर !
धन्य है अंगारक.
समाप्त